भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रवाद का उदय: उदारवाद से उग्रवाद तक की वैचारिक यात्रा का समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. अनुपम मित्र
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, स्वार, रामपुर(उ.प्र.)

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक भारत में राष्ट्रवाद का उदय एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ, जिसमें औपनिवेशिक शोषण, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक असंतोष और वैचारिक जागरूकता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रवाद के विकास तथा उसके भीतर उदारवादी और उग्रवादी विचारधाराओं के उद्भव का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है। यह स्पष्ट किया गया है कि प्रारंभिक उदारवादी दृष्टिकोण ने राजनीतिक चेतना और संस्थागत आधार का निर्माण किया, जबकि उग्रवादी विचारधारा ने आंदोलन को अधिक सक्रिय, जनोन्मुख और संघर्षशील स्वरूप प्रदान किया। दोनों धाराओं के बीच वैचारिक मतभेदों के बावजूद उनका संयुक्त प्रभाव राष्ट्रवाद के विस्तार में सहायक सिद्ध हुआ। इस प्रकार, यह अध्ययन यह स्थापित करता है कि वैचारिक विविधता और संघर्ष भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की एक आवश्यक और रचनात्मक प्रक्रिया थी।

कुंजी शब्द: राष्ट्रवाद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, उदारवाद, उग्रवाद, वैचारिक संघर्ष

1. परिचय

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक भारत में राष्ट्रवाद का उदय एक क्रमिक, जटिल और बहुआयामी ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ। यह केवल राजनीतिक जागरूकता का परिणाम नहीं था, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तनों का समन्वित प्रभाव था। औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय समाज ने जिस प्रकार के शोषण, असमानता और प्रशासनिक दमन का अनुभव किया, उसने एक साझा असंतोष को जन्म दिया, जो धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना में परिवर्तित हुआ। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय हुआ, जिसने इस चेतना को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में एक ऐसे मंच के रूप में हुई, जिसने भारतीयों को पहली बार एक अखिल भारतीय राजनीतिक पहचान प्रदान की। प्रारंभिक वर्षों में यह संगठन शिक्षित मध्यवर्गीय नेतृत्व के अधीन था, जो ब्रिटिश शासन के साथ संवाद और संवैधानिक साधनों के माध्यम से सुधार प्राप्त करने में विश्वास रखता था। किन्तु समय के साथ-साथ कांग्रेस के भीतर वैचारिक विविधता का विस्तार हुआ, जिसने राष्ट्रवाद को अधिक व्यापक और गतिशील स्वरूप प्रदान किया। उदारवाद से उग्रवाद तक की यह वैचारिक यात्रा केवल संगठनात्मक परिवर्तन नहीं थी, बल्कि यह भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की दिशा और स्वरूप को निर्धारित करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया थी।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर विकसित उदारवादी और उग्रवादी विचारधाराओं का समालोचनात्मक विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि इन दोनों धाराओं के बीच का वैचारिक संघर्ष किस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सहायक सिद्ध हुआ। इसके अंतर्गत यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि कैसे कांग्रेस एक सीमित राजनीतिक मंच से एक व्यापक जनआंदोलन में परिवर्तित हुई और इस प्रक्रिया में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

1.1 औपनिवेशिक संदर्भ और राष्ट्रीय चेतना का उदय

भारत में राष्ट्रवाद के उदय को समझने के लिए औपनिवेशिक संदर्भ का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। ब्रिटिश शासन ने भारत में प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन किए, जिनका भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। औपनिवेशिक नीतियों के कारण एक ओर जहां आधुनिक शिक्षा, संचार और परिवहन के साधनों का विकास हुआ, वहीं दूसरी ओर आर्थिक शोषण, संसाधनों का दोहन और सामाजिक असमानताओं में वृद्धि भी हुई।

आधुनिक शिक्षा के प्रसार ने भारतीय समाज में एक नए शिक्षित वर्ग का निर्माण किया, जिसने पश्चिमी राजनीतिक विचारों, जैसे स्वतंत्रता, समानता और प्रतिनिधित्व, से प्रेरणा प्राप्त की। इस वर्ग ने औपनिवेशिक शासन की नीतियों की आलोचना करना प्रारंभ किया और राजनीतिक अधिकारों की मांग उठाई। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और सार्वजनिक सभाओं के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा, जिससे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।

इसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण उत्पन्न गरीबी, बेरोजगारी और औद्योगिक पतन ने व्यापक असंतोष को जन्म दिया। यह असंतोष केवल आर्थिक नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक

और सामाजिक स्तर पर भी व्यक्त होने लगा। इस प्रकार, औपनिवेशिक शासन ने अनजाने में ही उन परिस्थितियों को जन्म दिया, जिन्होंने राष्ट्रवाद के विकास को प्रोत्साहित किया।

1.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन और प्रारंभिक स्वरूप

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन 1885 में एक ऐसे समय में हुआ, जब भारत में राजनीतिक चेतना का प्रारंभिक विकास हो चुका था। इसका उद्देश्य भारतीयों को एक साझा मंच प्रदान करना था, जहां वे अपनी समस्याओं और मांगों को संगठित रूप से प्रस्तुत कर सकें। प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस का स्वरूप एक अभिजात्य संगठन का था, जिसमें मुख्यतः शिक्षित और संपन्न वर्ग के लोग शामिल थे।

कांग्रेस के प्रारंभिक नेताओं ने संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों को अपनाते हुए प्रशासनिक सुधारों की मांग की। उनका विश्वास था कि ब्रिटिश शासन न्यायपूर्ण और उदार हो सकता है, यदि उसे भारतीयों की समस्याओं से अवगत कराया जाए। उन्होंने याचिकाओं, प्रस्तावों और संवाद के माध्यम से अपनी मांगों को प्रस्तुत किया।

इस चरण में कांग्रेस की गतिविधियाँ सीमित थीं और इसका प्रभाव मुख्यतः शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित था। हालांकि, इसने भारतीय राजनीति में एक नई परंपरा की शुरुआत की, जिसमें संगठित और वैधानिक संघर्ष को महत्व दिया गया। यह चरण राष्ट्रवाद के विकास के लिए आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसने राजनीतिक चेतना को संस्थागत रूप प्रदान किया।

1.3 उदारवाद से उग्रवाद तक वैचारिक परिवर्तन

समय के साथ कांग्रेस के भीतर उदारवादी दृष्टिकोण की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं। ब्रिटिश सरकार की उदासीनता और दमनात्मक नीतियों के कारण यह स्पष्ट हो गया कि केवल याचिकाओं और संवाद के माध्यम से महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन संभव नहीं हैं। इस परिस्थिति में कांग्रेस के भीतर एक नई विचारधारा का उदय हुआ, जिसे उग्रवाद के रूप में जाना गया।

उग्रवादी नेताओं ने यह तर्क दिया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अधिक सक्रिय और संघर्षपूर्ण रणनीतियों की आवश्यकता है। उन्होंने स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे उपायों को अपनाया, जिससे राष्ट्रवाद को व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ। इस दृष्टिकोण ने आंदोलन को अधिक जनोन्मुख और भावनात्मक स्वरूप प्रदान किया।

उदारवादियों और उग्रवादियों के बीच का यह वैचारिक संघर्ष केवल मतभेद का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह राष्ट्रवाद के विकास की एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी। इस संघर्ष ने कांग्रेस के भीतर नई ऊर्जा और गतिशीलता का संचार किया तथा इसे एक व्यापक आंदोलन में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध हुआ।

1.4 अध्ययन की प्रासंगिकता और समालोचनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रवाद के उदय का अध्ययन वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार विभिन्न विचारधाराएँ एक साथ मिलकर एक राष्ट्रीय आंदोलन का निर्माण करती हैं। उदारवाद और उग्रवाद के बीच का वैचारिक संघर्ष यह दर्शाता है कि राजनीतिक आंदोलनों में विविधता और मतभेद भी विकास के लिए आवश्यक होते हैं।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो कुछ इतिहासकारों ने यह तर्क दिया है कि कांग्रेस का प्रारंभिक स्वरूप सीमित और अभिजात्य था, जिसमें व्यापक जनभागीदारी का अभाव था। वहीं, अन्य विद्वानों का मत है कि कांग्रेस ने समय के साथ अपने आधार का विस्तार किया और विभिन्न सामाजिक वर्गों को अपने साथ जोड़ा।

यह अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि भारतीय राष्ट्रवाद का विकास एक रैखिक प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह विभिन्न चरणों और विचारधाराओं के अंतर्संबंध का परिणाम था। उदारवादियों ने जहां राजनीतिक चेतना और संस्थागत ढांचे की नींव रखी, वहीं उग्रवादियों ने उसमें संघर्ष और जनसहभागिता का तत्व जोड़ा।

अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर उदारवाद से उग्रवाद तक की वैचारिक यात्रा ने राष्ट्रवाद को एक समृद्ध, व्यापक और प्रभावशाली आंदोलन में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह प्रक्रिया न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समकालीन राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को समझने के लिए भी एक उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करती है।

2. साहित्य समीक्षा

चंद्र (2009) ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का व्यापक विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राष्ट्रवाद के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाई। उनके अनुसार उदारवादी चरण ने

राजनीतिक चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जबकि उग्रवादी चरण ने इस चेतना को जनआंदोलन में परिवर्तित करने की दिशा प्रदान की। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि दोनों धाराएँ परस्पर विरोधी होने के बावजूद एक-दूसरे की पूरक थीं और उनके सम्मिलित प्रभाव से राष्ट्रवाद का विस्तार संभव हुआ।

सरकार (1983) ने आधुनिक भारत के इतिहास में कांग्रेस की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि प्रारंभिक राष्ट्रवाद सीमित और अभिजात्य वर्ग तक केंद्रित था। उनके अनुसार उदारवादी नेतृत्व ने राजनीतिक संवाद और याचिका की नीति अपनाई, किन्तु यह रणनीति जनसाधारण को आकर्षित करने में असफल रही। उग्रवादियों के उदय ने इस सीमितता को तोड़ा और आंदोलन को अधिक आक्रामक तथा व्यापक स्वरूप प्रदान किया।

ब्राउन (1994) ने भारत में लोकतांत्रिक परंपराओं के विकास का अध्ययन करते हुए कांग्रेस की भूमिका को महत्वपूर्ण माना। उनके अनुसार उदारवादी नेताओं ने संवैधानिक मूल्यों और संस्थागत राजनीति की नींव रखी, जिसने आगे चलकर लोकतांत्रिक प्रणाली के विकास में योगदान दिया। साथ ही, उग्रवादी नेताओं ने राजनीतिक सक्रियता को बढ़ाया और जनता को प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया।

गुहा (2007) ने भारतीय राजनीति के विकास का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि कांग्रेस ने समय के साथ अपने स्वरूप में परिवर्तन किया और विभिन्न सामाजिक वर्गों को अपने साथ जोड़ा। उनके अनुसार उदारवादी और उग्रवादी विचारधाराओं के बीच संघर्ष ने संगठन को अधिक गतिशील बनाया और राष्ट्रवाद को विविध आयाम प्रदान किए।

मेटकाफ (1995) ने औपनिवेशिक विचारधाराओं के संदर्भ में राष्ट्रवाद के उदय को समझाने का प्रयास किया। उनके अनुसार कांग्रेस का उदय औपनिवेशिक शासन की नीतियों के प्रतिरोध के रूप में हुआ, जिसमें उदारवादी नेताओं ने प्रारंभिक बौद्धिक आधार तैयार किया और उग्रवादियों ने इसे जन-आधारित आंदोलन में परिवर्तित किया।

बेयली (1988) ने भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए यह बताया कि राष्ट्रवाद का विकास सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से गहराई से जुड़ा हुआ था। उनके अनुसार

कांग्रेस ने इन परिवर्तनों को संगठित रूप प्रदान किया और विभिन्न वर्गों के हितों को एक साझा मंच पर लाने का प्रयास किया, जिससे राष्ट्रवाद का विस्तार हुआ।

बोस (2015) ने दक्षिण एशिया के आधुनिक इतिहास में राष्ट्रवाद की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया कि कांग्रेस के भीतर वैचारिक विविधता ने आंदोलन को अधिक समृद्ध बनाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि उदारवादी और उग्रवादी दोनों धाराओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान किए, जिससे उसकी रणनीति और प्रभावशीलता में वृद्धि हुई।

जलाल (1995) ने दक्षिण एशिया की राजनीतिक संरचनाओं का अध्ययन करते हुए यह बताया कि राष्ट्रवाद का विकास केवल राजनीतिक प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित था। उनके अनुसार कांग्रेस ने इन विभिन्न कारकों को एकीकृत करने का प्रयास किया, जिससे राष्ट्रवाद को व्यापक आधार मिला।

रॉय (2011) ने आर्थिक दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि औपनिवेशिक नीतियों के कारण उत्पन्न आर्थिक असंतोष ने राष्ट्रवादी आंदोलन को गति दी। उनके अनुसार कांग्रेस ने इस असंतोष को संगठित रूप दिया और इसे राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित किया।

सेन (1981) ने गरीबी और सामाजिक असमानता के संदर्भ में राष्ट्रवाद का अध्ययन करते हुए यह तर्क दिया कि आर्थिक समस्याएँ राष्ट्रवादी चेतना के विकास में महत्वपूर्ण कारक थीं। उनके अनुसार कांग्रेस ने इन समस्याओं को राजनीतिक मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ।

हबीब (2010) ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद के विकास का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष ने भारतीय समाज को एकजुट किया। उनके अनुसार कांग्रेस ने इस एकता को संगठित रूप दिया और विभिन्न वर्गों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया।

तालिका १: साहित्य समीक्षा का सारांश और मुख्य निष्कर्ष

क्रम संख्या	साहित्य संदर्भ	प्रमुख विषय	मुख्य निष्कर्ष
1	चंद्र (2009)	राष्ट्रवाद का विकास	उदारवादी और उग्रवादी पूरक भूमिका
2	सरकार (1983)	आधुनिक भारत	उग्रवाद से आंदोलन का विस्तार
3	ब्राउन (1994)	लोकतांत्रिक विकास	संस्थागत राजनीति की नींव

4	गुहा (2007)	राजनीतिक परिवर्तन	वैचारिक संघर्ष से गतिशीलता
5	मेटकाफ (1995)	औपनिवेशिक विचारधारा	राष्ट्रवाद का बौद्धिक आधार
6	बेयली (1988)	सामाजिक परिवर्तन	विभिन्न वर्गों का एकीकरण
7	बोस (2015)	दक्षिण एशिया	वैचारिक विविधता से समृद्धि
8	जलाल (1995)	राजनीतिक संरचना	सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव
9	रॉय (2011)	आर्थिक दृष्टिकोण	आर्थिक असंतोष से राष्ट्रवाद
10	सेन (1981)	गरीबी अध्ययन	सामाजिक मुद्दों का राजनीतिकरण
11	हबीब (2010)	ऐतिहासिक विश्लेषण	एकता और संगठन का विकास

3. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विकास और उसके भीतर उदारवादी तथा उग्रवादी विचारधाराओं का उद्भव भारतीय राष्ट्रवाद की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था। उदारवादी नेताओं ने जहां संवैधानिक साधनों और संवाद के माध्यम से राजनीतिक चेतना को जागृत किया और संगठनात्मक आधार प्रदान किया, वहीं उग्रवादी नेताओं ने संघर्ष, स्वदेशी और बहिष्कार जैसे उपायों के माध्यम से आंदोलन को अधिक प्रभावशाली और जनसहभागी बनाया।

दोनों धाराओं के बीच वैचारिक मतभेदों ने संगठन को कमजोर करने के साथ-साथ उसे नई दिशा भी प्रदान की। इस संघर्ष ने कांग्रेस को एक सीमित अभिजात्य संगठन से एक व्यापक जनआंदोलन में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समालोचनात्मक दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रवाद का विकास एक रैखिक प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह विभिन्न विचारधाराओं और सामाजिक शक्तियों के अंतर्संबंध का परिणाम था। उदारवाद और उग्रवाद के समन्वय ने राष्ट्रवाद को गहराई, व्यापकता और गतिशीलता प्रदान की, जिसने अंततः स्वतंत्रता आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ सूची

Bayly, C. A. (1988). *Indian society and the making of the British Empire*.

Bose, S. (2015). *Modern South Asia*.

Brown, J. (1994). *Modern India: The origins of an Asian democracy*.

Chandra, B. (2009). *India's struggle for independence*.

Guha, R. (2007). *India after Gandhi*.

Habib, I. (2010). *Essays in Indian history*.

Jalal, A. (1995). *Democracy and authoritarianism in South Asia*.

Metcalf, T. R. (1995). *Ideologies of the Raj*.

Roy, T. (2011). *The economic history of India*.

Sarkar, S. (1983). *Modern India*.

Sen, A. (1981). *Poverty and famines*.